श्री सतगुरु रामसिंह जी महाराज

स्वतंत्रता व असहयोग आंदोलन के प्रमुख

स्वतंत्रता सैनानी

नामधारी सिक्ख

श्री सत्गुरु रामसिंह जी

देश की स्वतंत्रता के लिए नामधारी सिक्खों की अद्वितीय तथा अकथनीय कुर्बानियों को जंगे आज़ादी के इतिहास के प्राथमिक पन्नों पर "कूका आन्दोलन" के नाम से अंकित किया गया है। भारत की आज़ादी के सर्वप्रथम प्रणेता, असहयोग आन्दोलन के प्रवर्त्तक श्री सत्गुरु रामसिंह जी ने 12 अप्रैल 1857 ई. को श्री भैणी साहिब जिला लुधियाना (पंजाब) से जब अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाई तब भारतवासी पराधीनता के साथ-साथ अनेक अधोगामी धार्मिक प्रपंचों तथा सामाजिक कुरीतियों के तले दबे हुए थे।

इन परिस्थितियों में सत्गुरु जी ने लोगों में आत्मसम्मान जगाने, भक्ति-भाव तथा वीर रस पैदा करने के लिए यह आवश्यक समझा कि सर्वप्रथम उनका नैतिक उत्थान तथा सामाजिक सुधार किया जाए, अन्यथा वे असहाय ही बने रहेंगे। अतः "भय काहू कउ देत नहि नहि भय मानत आन" के अनुकूल उनका आचरण ढालने तथा उनमें श्रेष्ठ नैतिक गुणों के विकास के लिए उन्होंने "नाम जप" तथा "गुरबाणी पाठ" पर विशेष ज़ोर दिया। देशप्रेम, आपसी मेल-मिलाप, सहनशीलता तथा एकजुट रहने तथा बाँट कर खाने के लिए उन्हें प्रेरित किया। दस नाखुनों की अर्थात् हक-हलाल की कमाई करने के लिए गुरु नानक देव जी का यह शब्द "हक पराया-नानका उस सूअर उस गाय" उनका सिद्धान्त वाक्य बना दिया। यह सब कुछ उन्होंने इतने सरल ढंग से, लोगों की अपनी बोली, पंजाबी भाषा में ऐसे प्रचारित किया कि
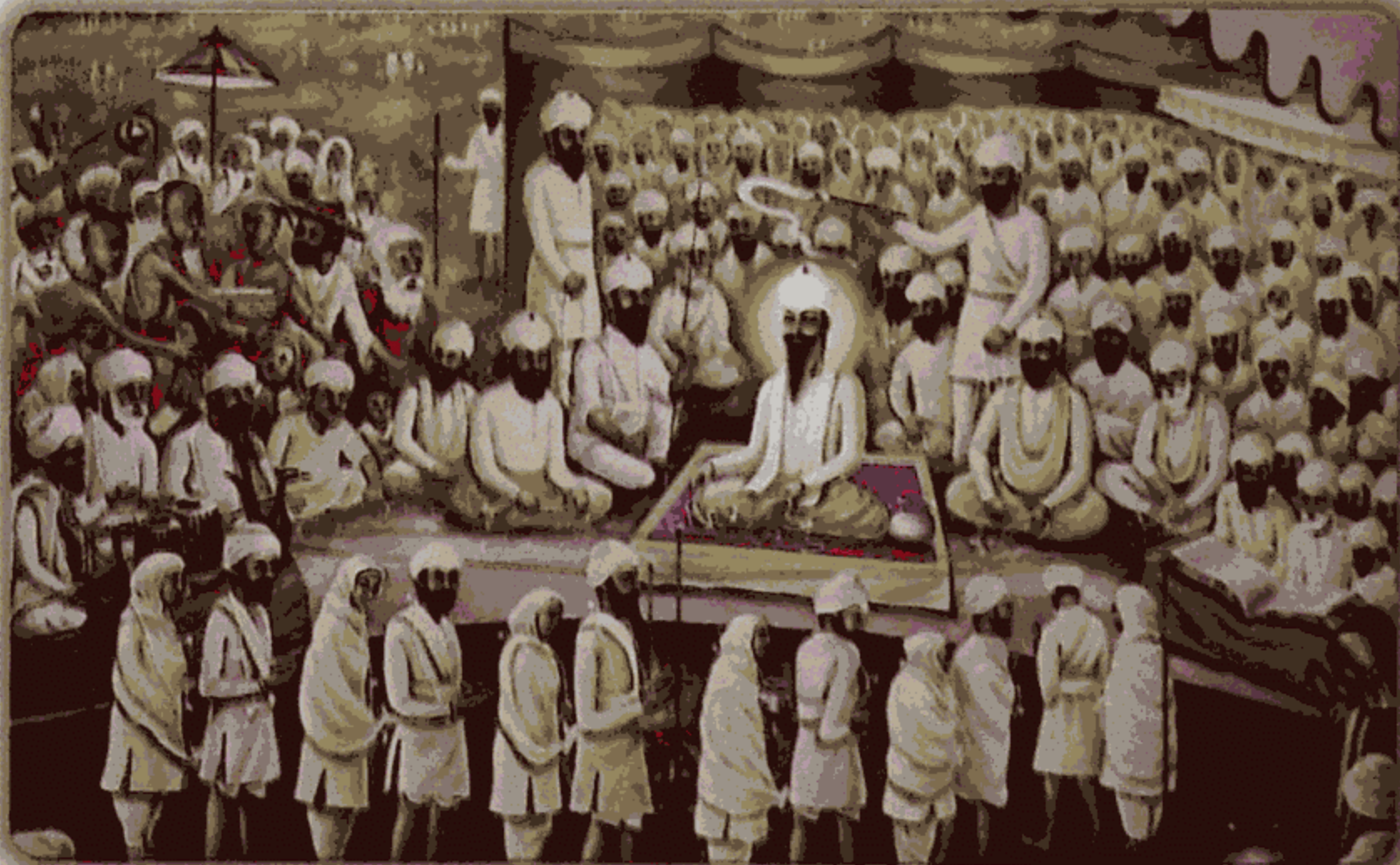
(श्री सत्गुरु रामसिंह जी अंतरजाती एवं दाज़ रहित आनन्द कारज की प्रथा शुरू करते समय)

डी.आई जी मैक एण्ड्रियो की रिपोर्ट अनुसार "गुरु रामसिंह के प्रचार ने पंजाब में उथल-पुथल मचा दी" - (रिपोर्ट दिनांक 9/6/1862)

नामधारी सिक्खों के आचरण के सम्बंध में अंग्रेजी रिकार्ड कहता है- "कूका झूठ नहीं बोलता।" "कूका शराब नहीं पीता।"

समाज-सुधार क्रान्ति

उन्नीसवीं सदी में कन्नाओं को जन्म लेते ही हत्या कर देना या उन्हें बेच देना अथवा विद्या से वंचित रखना, बाल विवाह और विधवा विवाह की मनाही जैसी कई कुरीतियां समाज में प्रचलित थीं। समाज को जन्म देने वाली स्त्री को पूर्णतया लज्जित किया तथा ठुकराया जा रहा था। श्री सत्गुरु रामसिंह जी ने लड़के तथा लड़कियों, दोनों को विद्या पढ़ाने के आदेश दिये। पुरुषों की भान्ति स्त्रियों को भी अमृत छका कर सिक्खी प्रदान की। सामाजिक समता के लिए बीबी हुक्मी को "सूबा" नियुक्त किया। गुरू जी ने विवाह से सम्बन्धित सभी खर्चों पर रोक लगा दी। बिना ठाका, शगुन, बारात, डोली तथा दहेज के, सवा रुपये में विवाह करने की नई रीति का श्री गणेश किया जिसे "आनन्द कारज" कहा जाने लगा। पहली बार 3 जून 1863 ई. को गाँव खोटे जिला मोगा (पंजाब) में छः अन्तजातीय सामूहिक विवाह कराकर समाज में एक क्रान्ति ला दी।

श्री कपूर सिंह आई.सी.एस. अपनी पुस्तक "सप्त श्रंण" में लिखते हैं - "बाबा रामसिंह एक महान सुधारक तथा मार्गदर्शक हुए हैं, जिन्होंने समाज में पुरुष तथा स्त्री की सम्पूर्ण एकता का प्रचार किया तथा उस में सफल भी हुए। अगर उनके द्वारा देश तथा जाति के लिए किये गए अन्य महान कार्यों को छोड़ भी दिया जाए, तो उनका

केवल यही प्रचार - कि " स्त्री तथा पुरुष समाज में बराबर के हकदार हैं" - उनको संसार भर के मुख्य सुधारकों की पंक्ति में ला खड़ा कर देता है।"

सतुगुरु रामसिंह जी की प्रचार प्रणाली चुम्बकीय थी। थोडे ही समय में लाखों की संख्या में लोग नामधारी बन गए। वे निर्भय - निश्शंक हो कर अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध कूकें (हुंकार) मारने लगे तथा इसी से इतिहास में "कूका नाम से प्रसिद्ध हो गए।

अंबाला क्षेत्र का डी.आई.जी. - मैक एन्ड्रियो श्री सतुगुरु रामसिंह जी के प्रति लोगों की बढ़ती हुई श्रद्धा को इस प्रकार प्रकट करता है - "जब मैंने पहली बार उसके बालक राम (गुरु बालक सिंह) हजरोंवाले का उत्तराधिकारी होने के बार में सुना था, तो वह रामसिंह महंत के नाम से जाना जाता था, बाद में गुरु रामसिंह, फिर सतुगुरु रामसिंह तथा अब सतुगुरु-पातशाह के नाम से जाना जाता है।" (4-11-1871)

प्रसिद्ध इतिहासकार सैयद मुहम्मद लतीफ "हिस्ट्री आफ पंजाब" में लिखते हैं - "वास्तव में (गुरु) रामसिंह व उनके अनुयायियों के उद्देश्य मात्र धार्मिक ही नहीं थें, अपितु धर्म-सुधार एवं नैतिक मूल्यों के आदर्श उपदेशों के आवरण में निहित राजनैतिक लक्ष्य थे।"

मि.जे. डब्लू. मैकनाब, कमिश्नर अंबाला अपनी रिनोर्ट दिनांक 4-11-1871 में लिखता है - "उनके (गुरु रामसिंह के) इरादे शुरू में चाहे कुछ भी हों, किन्तु अब इनका इरादा राजनीतिक है। वह ऐसे पंथ का प्रमुख तथा अद्वितीय नेता है, जो अपने स्वभाव के अनुसार खालसा राज्य को दोबारा जागृत करने की सामार्थ्य से अंग्रेजी शक्ति का बैरी है। पहले रामसिंह संतस्वरूप गुरुनानक (देव जी) का रूप समझा जाता था, किन्तु अब वह गुरुगोबिन्द (सिंह जी) का अवतार माना जाता है।"

सतगुरु रामसिंह जी की असहयोग एवं स्वदेशी अन्दोलन

असहयोग तथा स्वदेशी आन्दोलन

श्री सतुगुरु रामसिंह जी ने विश्व में पहली बार शांतिमय उपायों से आज़ादी की लड़ाई लड़ने के लिये असहयोग तथा स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात किया। शहीद भगतसिंह जी ने लिखा था-

"उन्होंने (गुरु रामसिंह जी ने) उस समय जिस असहयोग आन्दोलन का प्रचार आरम्भ किया, उसी को 1920 में महात्मा गांधी ने अपनाया। उनका असहयोग आन्दोलन महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से कई बातों में बढ़ कर था। अदालतों का बहिष्कार, अपनी पंचायतों की स्थापना, सरकारी शिक्षा का बहिष्कार। विदेशी सरकार के बहिष्कार के साथ रेल, तार तथा डाक के बहिष्कार का भी पूरा प्रचार किया। उस समय देश इतना असहाय हो चुका था कि ऐसे बहिष्कार की बात सोची भी नहीं जा सकती थी। (महान कूका-लहर)"

"वास्तव में गुरु रामसिंह जी ने जो ऐतिहासिंक असहयोग तथा स्वदेशी आन्दोलन शुरु किया था, उसने भारत से अंग्रजी साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया था तथा इसी नीति की मदद से महात्मा गांधी भारत से गुलामी की ज़ंजीरों को काटने में कामयाब हुए।" (डा. राजेन्द्र प्रसाद - सर्वप्रथम राष्ट्रपति, भारत)

"(गुरु) रामसिंह सिख दार्शनिक तथा सुधारक एवं अंग्रेजी सरकार व उसकी नौकरियों के प्रति असहयोग तथा बहिष्कार को राजनीतिक शस्त्र बना कर प्रयोग में लाने वाला पहला भारतीय है।" (एनसाईकलोपीडिया ब्रिटेनिया)

नामधारी सिक्खों की ओर से अपना डाक-प्रबन्ध, अपने शिक्षण-संस्थान, इलाकों में सूबों की नियुक्ति तथा विदेशों में नेपाल, रूस, अफगानिस्तान से राजनीतिक सम्बंध इस बात का प्रमाण थे कि सतुगुरु रामसिंह

जी ने सामानान्तर सरकार बना ली थी। कश्मीर में तो 1869—70 में 'कूका पल्टन' भी बन गई थी।

"केवल पंजाब को 22 सूबों में हो नहीं बाँटा गया था, बल्कि इनमें (गुरु) रामसिंह के सूबे (प्रचारक) भ्रमण करके खालसा राज्य के दोबारा बहुत जल्दी स्थापित होने का प्रचार करते थे तथा सिक्खों के सभी वर्गों की शक्तियों को इकट्ठा कर रहे थे। कशमीर, काबुल तथा नेपाल में अपने राजदूत भेजे थे। इनका खुफिया डाक-प्रबंध तो इतना परिपूर्ण था कि गुरु जी को आदेश आश्चर्यजनक शीघ्रता के साथ दूर-दूर तक के इलाकों में भी पहुँच जाते थे।"
(मि. फोरसाइथ-चीफ कमिश्नर, अंबाला, रिपोर्ट-1872)

कुर्बानियाँ

अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता की स्थापना तथा दृढ़ता के लिए 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति को आधार बनाया था। श्री सतगुरु रामसिंह जी ने अंग्रेजों से आजादी पाने के लिए 'संगठित हो कर लड़ों' 'unit and fight' की नीति का प्रचार किया। इस लिए जब धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाने तथा पराधीनता का एहसास दिलाने के लिए अंग्रेजों ने पंजाब में जगह-जगह गाय के वध के लिए बूचड़खाने खोले, तो नामधारी सिक्खों ने इसका प्रचण्ड विरोध किया।

'कूके कई कारणों से गाय के वध के सख्त विरुद्ध थे। एक तो गोवध के पीछे अंग्रेजों का हाथ था, अंग्रेजों ने ही ये बूचड़खाने शुरु किए थे तथा वे ही इन्हे बन्द होने नहीं दे रहे थे। दूसरे, गाय का वध बंद करना आज़ादी की लहर के साथ एक गहरा संबन्ध रखता था, क्योंकि खालसा राज्य के दौरान गाय के वध की सख्त मनाही थी। तीसरे, अगर आन्दोलन गाय के वध जैसे नाजुक प्रश्न पर छेडा जाए तो इसकी सफलता में शक की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी।'
(डा. फौजा सिंह-पंजाबी वीर-परम्परा में)

इसलिए, नामधारी सिक्खों ने 15 जून 1871 इ. को अमृतसर तथा 15 जुलाई 1871 ई. को रायकोट बूचड़खाने पर धावा बोल दिया। बूचड़ों को मार दिया तथा गौओं को मृक्त कर दिया। अंग्रेज यह विद्रोह देख कर बौखला गया। उसने बेकसूर लोगों को ही मार-पीट करके जुल्म कुबुल करवा कर सज़ा देने की योजना को अंजाम देने की ठान ली। किन्तु नामधारी सिक्खों ने अदालत में प्रमाण सहित पेश होकर अपने जुर्म कुबुल किए तथा अंग्रेजों की अन्धी नीतियों का पर्दा फाश कर दिया। इस विद्रोह के जुर्म में 5 अगस्त 1871 इ. को तीन नामधारी सिक्खों को रायकोर्ट में, 15 सितम्बर 1871 ई. को चार नामधारी सिक्खों को अमृतसर में तथा दो नामधारी सिक्खों को लुधियाना में बढ़ के वृक्ष के साथ 26 नवम्बर 1871 ई. को सरे आम फाँसी दे कर शहीद कर दिया गया।

देश की आजादी के परवाने नामधारी शहीद

मलेरकोटला का खुनी कांड

मलोद में एक हल्की मुठभेड़ के बाद 15 जनवरी 1872 ई. को सरदार हीरा सिंह तथा सरदार लहना सिंह जी के जत्थे ने मलेरकोटला पर धावा बोल दिया। दोनों ओर की लड़ाई में कई आदमी मारे गए। इन लड़ाइयों में दस नामधारी सिक्ख लड़ते हुए शहीद हो गए। सरदार हीरा सिंह की बांई बाजू कट गई। चार सिक्ख बुरी तरह घायल हो गए, जिन्हें बाद में मुकदमा चला कर काले पानी की सज़ा दे दी गई तथा वह जेल में ही शहीद हो गए। 15 जनवरी की शाम को यह जत्था लड़ाई के पश्चात मलेरकोटले के समीप ही 'रढ' नाम के गांव में पहुँचा। सरदार हीरा सिंह ने जत्थे को सम्बोधित किया:

"साथीओ! हमारा लक्ष्य पूरा हुआ। हमने तो अंग्रेजों को बताना था कि अब देश-वासी जागृत हो गए हैं, वे विदेशी राज्य नहीं चाहते और न ही अपने धर्म में किसी हस्तक्षेप को पसंद करते हैं।"

इसके पश्चात्, जत्थे ने प्रस्ताव पास करके, गांव शेरपुर जा कर आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेज हर उस चिंगारी को बुझा देना चाहते थे, जो उनके राज्य को आँच पहुँवाए, किन्तु यहाँ तो ज्वाला ही भड़क चुकी थी। अंग्रेज शासक ने ठान लिया कि वह इन विद्रोही नामधारी सिक्खों को समाप्त कर देगा। इस के लिए मलेरकोटला के परेड ग्राउंड में देसी रियासतों से नौ तोपें मंगवा कर तान दी गई। पड़ोस के गांवों से लोग भी इकट्ठे कर लिए गए ताकि नामधारी सिक्खों को सजा मिलती देख कर दोबारा कोई भी विद्रोह करने का साहस न करे। नामधारी सिक्खों का यह जत्था 17 जनवरी 1872 ई. को मलेरकोटला के 'खुनी रक्कड़' में प्रविष्ट हुआ। अंग्रेज शासक डी.सी. कावन ने जत्थे के मुखिया सरदार हीरा सिंह से पूछा - "तुमने गदर क्यों मचाया है?" सरदार हीरा सिंह ने उत्तर दिया -

"हम तुम्हारा राज नहीं चाहते, हम अपने भाइयों का राज चाहते हैं..........हम फिर जन्म लेंगे, अपने हाथों में तलवार लेकर युद्ध करेंगे तथा तुम्हारा राज समाप्त करेंगे।"

डी. सी. कावन सुनकर आग बबूला हो गया। बिना कोई कानूनी कार्यवाही किये और बिना मुकदमा चलाये, नामधारी सिक्खों को तोपों से उड़ाने का हुक्म दे दिया गया। "भाई हीरा सिंह तथा लहना सिंह स्नान कर के तोप के सम्मुख खड़े हो गए। बिल्ले (अंग्रेज) ने जल्लादों को कहा कि इन्हें रस्से से बाँधकर खड़ा करो। सिंखों ने चण्डाल से कहा - दूर हटो, हम स्वंय ही तोप के सामने जा खड़े होंगे। तब वे ललकारते हुए तोप के सामने जा खड़े हुए। बिल्ले (अंग्रेज) ने कहा-पीठ करो। सिंखों ने गरज कर कहा-पीठ नहीं करेंगे। सम्मुख होकर उड़ेगे। तब वे साहसी सिंह सीने तान कर खड़े हो गए। (सरदार संतोख सिंह बाहुवाल, सतुगुरु विलास से)

सात तोपें, सात बार चलीं, 49 सिख देश की आज़ादी की खातिर टुकड़े-टुकड़े हो कर शहीद हो गए। इस जत्थे में 12 वर्ष का एक बच्चा बिशन सिंह भी था, जिसे डी.सी. कावन तथा उसकी पत्नी ने कहा - "तुम कह दो मैं राम सिंह का सिक्ख नहीं, तुम्हारी जान बख्श देंगे।" अपने सतुगुरु का अपमान होता देख कर बिशन सिंह की आँखें अंगारा बन गई। उसने शेर की तरह लपक कर कावन की दाढी पकड़ ली और गरज कर बोला - "जरा फिर से तो कहो कि मैं सतुगुरु रामसिंह का सिक्ख नहीं।" यह देख पास खड़े सिपाही घबरा गए। उन्होने फुर्ती से बिशन सिंह के हाथ काटे, फिर सर धड़ से अलग कर के शहीद कर दिया।

18 जनवरी 1872 ई. को 16 अन्य सिक्खों को तोपों से उड़ा कर शहीद कर दिया गया। इन 16 में से एक सरदार वरयाम सिंह था। उसके लिए पटयाला के महाराजा ने रिहाई की सिफारिश की थी। अंग्रेज शासक ने वरयाम सिंह से कहा कि तुम तोप के आगे से हट जाओ, तुम्हारा कद छोटा है। वरयाम सिंह भाग कर साथ के खेतों से मिट्टी के ढेले इकट्ठे कर लाया, उनका एक टीला बना कर उस पर खड़ा हो कर कहने लगा - "देख ओ बिल्ले ! अब मैं तुम्हारी तोप के आगे पूरा हूँ, तोप चलाओ।"

इस प्रकार मलेरकोटला कांड में दस सिख लड़ते हुए, चार कालेपानी की सज़ा काटते हुए जेल में, पैंसठ सिक्ख तोपों द्वारा तथा एक सिक्ख तलवार द्वारा - कुल मिलाकर अस्सी नामधारी सिक्ख शहीद हो गए।

सर हैनरी काटन अपनी पुस्तक - "Indian and Home Memories" में लिखता है - मेरी 1872 की यादें अपूर्ण रहेंगी, अगर मैं मलेरकोटला की घटना, जिसे मैं वहशियाना कत्लेआम ही कह सकता हूँ, का जिक्र न करूं ....मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि भारत में मेरी नौकरी के दौरान कोई ऐसी विद्रोहपूर्ण तथा भयानक घटना नहीं घटी, जितना भयानक यह कत्लेआम था। "

दि फ्रैण्ड आफ इण्डिया में 1–2–1872 में अंग्रेजों के इस वहशियाना जुल्म का विरोध छपा - "हम बिना किसी सरकारी बयान अथवा दस्तावेज का इन्तजार किए, डिप्टी कमिश्नर कावन के आदेशानुसार किए गए इस सामूहिक नर-संहार का विरोध करते हैं।"

नामधारी समुदाय-विद्रोही घोषित

अंग्रेज तो नामधारी सिक्खों पर रोक लगाने का बहाना ढूंढ रहे थे। मलेरकोटला के कांड ने उनको इस बात का मौका दे दिया। उन्होंने श्री सतुगुरु रामसिंह जी को गिरफ्तार कर के पहले इलाहाबाद में तथा फिर देश निकाला दे कर बरमा (माईनामार) में यंगुन और मरगोई (मीक) में कैद कर के रखा। सूबों को भी गिरफ्तार कर के देश-विदेश
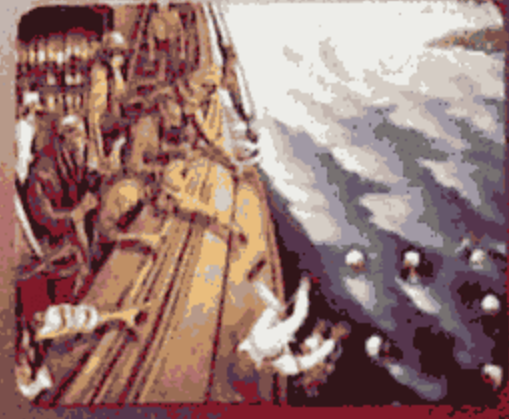
(देश की अजादी के लिए जलावतन एवं सखतियों का दौर)

की जेलों में उम्र कैद दे दी गयी जहाँ वे शहीद हो गए। नामधारी सिक्खों के प्रमुख केन्द्र श्री भैणी साहिब गुरुद्वारे के सम्मुख एक पुलिस चौकी बैठा दी गई, जो निरन्तर 51 वर्ष (1872–1923 ई. तक) रही। गुरुद्वारे के अन्दर जाने वाले दर्शनार्थीयों को पाँच-पाँच की गिनती में रजिस्टर में नाम दर्ज करवा कर जाने दिया जाता था। सम्पूर्ण नामधारी समुदाय को विद्रोही करार दे कर गांव-गांव में नजरबंद कर दिया गया। गांव से कहीं बाहर जाने के लिए पुलिस या गांव के मुखिया से अनुमति लेना अनिवार्य कर दिया गया। नामधारी सिक्खों की पाठ-पूजा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यहाँ तक कि अखण्ड पाठ करना भी अपराध माना जाने लगा। पाठ करने या करवाने वाले को जेलयात्रा तथा आर्थिक दण्ड भुगतना पड़ता था। नामधारी सिक्ख समुदाय के साथ कुख्यात अपराधियों जैसा व्यवहार शुरु हो गया। 1872 के Criminal Procedure Act की धारा 504–505 के अन्तर्गत सरकार के प्रति वफादारी तथा नेक चलनी की जमानतें मांगी जाने लगी। इन नियमों तथा कानूनों की अवहेलना करने तथा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध प्रचार करने वाले सैकड़ों-हजारों नामधारी सिक्खों की सम्पत्ति जब्त अथवा नीलाम कर दी गई। हजारों को जेल यात्रा सहनी पड़ी, असंख्य को कालेपानी की सज़ा हो गई तथा अनेकों को सागर में डुबो कर मार दिया गया। इतना होने पर भी नामधारी सिक्खों ने सभी दुख-तकलीफें सह लीं किन्तु अंग्रेज सरकार का आदेश बिल्कुल नहीं माना क्योंकि -

"यह सत्य है कि कूकों के लिए अंग्रेज सरकार के प्रति निष्ठावान होने का प्रश्न ही नहीं उठता।" (लुधियाना-डिस्ट्रिक गज़ेटियर - 1904)

श्री सतुगुरु राम सिंह के देशनिकाले के पश्चात श्री सतुगुरु हरीसिंह जी ने पंथ का मार्गदर्शन किया। अंग्रेजों ने सतुगुरु हरीसिंह जी को भी 20 वर्ष से भी अधिक समय तक श्री भैणी साहिब में नज़रबंद रखा।

श्री सतुगुरु प्रताप सिंह जी के समय में "इण्डियन नैश्नल कांग्रेस" के झण्डे तले आज़ादी की लड़ाई आरम्भ हो गई। नामधारी तो सदा ही देशभक्तों के सहयोगी थे। वे कांग्रेस के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अंग्रेजों
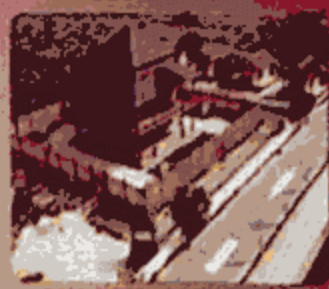
किला अलाहाबाद : सतुगुरु रामसिंह जी अपने 10 प्रमुख सुबों के साथ जनवरी से मार्च 1872 ई. तक यहां नजरबन्द रहे

देश की आजादी के लिए कुके (नामधारी) देश-भगत जेलों में

के विरुद्ध आन्दोलन में जुट गए। इन दिनों में श्री भैणी साहिब राजनीतिक हलचल का प्रमुख केन्द्र तथा अंग्रेज सरकार द्वारा घोषित देशभक्त विद्रोहियों का शरणस्थल बन गया। नामधारी सिक्खों ने स्थान स्थान पर अधिवेशन करके लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित करना शुरु कर दिया।

1929 में लाहौर में बारडेला हाल से जब कांग्रेस की ओर से एक विशेष अभियान शुरु हुआ, तो नामधारी सिक्खों ने सबसे आगे बढ़कर इसमें हिस्सा लिया तथा जेल यातनाएं सहीं। दिसम्बर 1929 के लाहौर अधिवेशन में नामधारी केवल शामिल ही नहीं हुए, बल्कि खाने पीने का समस्त खर्चा तथा प्रबन्ध भी उन्होने किया। इस अवसर पर एक विशाल जलूस निकाला गया।

27.12.1929 को लाहौर की 'दि ट्रिब्यून' संस्करण में समाचार प्रकाशित हुआः "पंडित जवाहर लाल नेहरू एक सफेद घोड़े पर सवार थे। वह एक सुन्दर सफेद सैनिक घोड़ा था। उसके पीछे स्वंयसेवी दस्ते के मुख्य अधिकारी तथा अन्य नेता शामिल थे। इनमें (नामधारी) सिक्खों को घोड़ों का दस्ता सबसे ज़्यादा आकर्षक था, जिन्होने सफेद खादी की पोशाक तथा सर पर सुन्दर पगड़ी सजा रखी थी। नामधारियों की खुली दाढ़ी सबसे अधिक मनमोहक दृश्य पेश कर रही थी।"

17 फरवरी 1939 को लुधियाना में स्टेट पीपल्ज़ कान्फ्रेन्स हुई। पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में एक विशाल जलूस विदेशी सरकार के विरुद्ध निकाला गया। श्री सतुगुरु प्रतापसिंह जी ने हजारों नामधारियों के साथ शामिल हो कर इस जलूस की शोभा बढ़ाई। पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी ने 1935 ई. 'सतयुग' पत्रिका में लिखाः "सतगुरु रामसिंह जी ने असहयोग आन्दोलन तथा देश के प्रति कुर्बानी देने की लहर चला कर देश भक्तों का जो मार्गदर्शन किया है, यदि समस्त देश यह समझ ले तो निकट भविष्य में ही अपनी गणना स्वतन्त्र देशों के अन्तर्गत करवा सकता है। ....सत्तर वर्ष पूर्व देश की स्वतन्त्रता के लिए अहिंसा का आंदोलन जितना प्रभावशाली था, वह आज भी उतना ही नवीन तथा बलशाली है।"

जब नेता सुभाष चन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फौज का संगठन किया तथा उसका केन्द्र बैंकाक (थाईलैन्ड) में बनाया, तब वहाँ के नामधारी सिक्खों ने तन, मन, धन से नेता जी कर सहयोग दिया।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा थाः-

"गुरु रामसिंह जी के फहराए हुए आज़ादी के झण्डे तले नामधारी कूकों ने जो कुर्बानियाँ की हैं, उन पर देश सदा गौरव करेगा। अब फिर भारतीयों के देश-प्रेम की परीक्षा होने वाली है और सदियों से अहिंसात्मक असहयोग-आन्दोलन का अनुभव रखने वाले नामधारी वीर कूकों से यही आशा है कि वह स्वतन्त्रता का झण्डा उठा कर आगे-आगे बढ़ते दिखाई देते रहेंगे और दूसरे देशवासियों को भी बलिदान के लिए उत्साहित करते रहेंगे।"

सन् 1945 ई. को शिमला में वेवल कान्फ्रैन्स हुई। समस्त देश-भक्त राजनीतिक पार्टियों ने उसमें भाग लिया। नामधारी सिक्खों के साथ श्री सत्गुरु प्रतापसिंह जी भी शिमला में इस कान्फ्रैन्स में सम्मिलित हुए। पण्डित नेहरू जी ने सत्गुरु प्रतापसिंह जी से निवेदन कियाः "महाराज जी ! आपकी किया मांग है।" श्री सत्गुरु जी ने उत्तर दिया-"हम अंग्रेजों से क्यों कुछ मांगें, मेरी तो एक ही इच्छा है कि हम स्वतन्त्र हों, स्वतन्त्र देश में गौ हत्या पूर्ण रूप से बंद हो तथा गरीबों का जीवन स्तर ऊँचा उठ सके।"

अन्ततः नामधारी सिक्खों और समस्त देश-भक्तों की कुर्बानियाँ रंग लाई तथा 15 अगस्त 1947 ई. को भारत स्वतन्त्र देश घोषित हुआ। महान कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर लिखते हैं:

"अपनी पसलियों को जला कर कूकों ने उस शमा को रोशन किया जिससे शान्ति, स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र तथा एकता को आलौकिक प्रकाश प्राप्त हुआ।"

देश आजाद होने के बाद श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज धर्म की प्रफुल्लता, देशभक्ति, एकता, अखंडता तथा शाकाहार एवं नशे रहित समाज सिरजाना और मऊ गरीब की रक्षा के लिए यतनशील रहे।

वर्तमान में सतगुरु उदे सिंह जी भरती संसकृित, युवा पीढी का मार्गदर्शन, उच्च शिक्षा और पूर्व गुरुओं के उपदेशों का प्रचार और प्रयास कर रहें हैं।

श्री सत्गुरू जगजीत सिंह जी महाराज
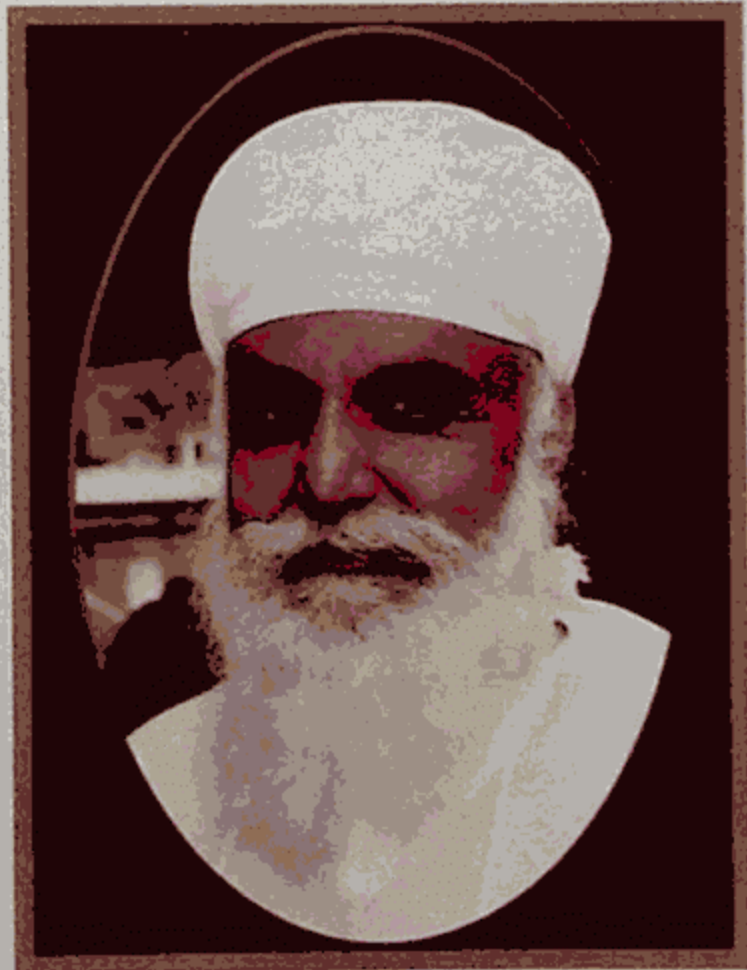
श्री सत्गुरू उदय सिंह जी महाराज

सूचना व लोक संम्पर्क विभाग, पंजाब